P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

नमितेश गुप्ता
शोध छात्रा,
गृहविज्ञान विभाग,
वी0 एम0 एल0 जी0 पी0 जी0 कॉलेज,
गाजियाबाद, उ0प्र0

उमा जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर,
गृहविज्ञान विभाग,
वी0 एम0 एल0 जी0 पी0 जी0 कॉलेज,
गाजियाबाद, उ0प्र0

सारांश

वयःसन्धि अवस्था मानव जीवन में परिवर्तन की वह अवस्था है जिसमें मानव बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करता है। बालिकाओं में यह अवस्था सामान्यताः 11 से 13 वर्ष तथा बालकों में यह 12–13 वर्ष के मध्य होती है, यद्यपि यह अवस्था अत्यन्त कम समय की होती है तथापि शारीरिक विकास एवं परिवर्तन के दृष्टिकोण से मानसिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वयःसन्धि अवस्था समस्याओं का घर है विशेषतयाः माता–पिता के संरक्षण, निर्देशन तथा पालन पोषण का इस अवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। इसमें भी माता की भूमिका को सर्वोपरि माना गया है क्योंकि शिशु को जन्म देने से लेकर वयःसन्धि अवस्था तक की सम्पूर्ण गतिविधियों, आवश्यकताओं, व्यवहारात्मक विशेषताओं, रूचियों, सम्पूर्ण परिवर्तनों तथा इनके कारण उत्पन्न समस्याओं को एक माता अधिक व्यापक रूप से जानती है, वर्तमान समय में महिलाओं में जीवनवृत्ति (कैरियर) के प्रति बढ़ती जागरूकता एवं आवश्यकताओं के कारण कार्यशील माताओं की संख्या बढ़ती जा रही है तथा इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठ रहा है कि कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं में से एक माता के रूप में सन्तान के साथ समायोजन स्थापित करने में कौन ज्यादा सफल है इसी तथ्य को ध्यान में रखकर कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन विषय का चयन किया गया। जिसके तीन उद्देश्य निर्धारित किये गये–घरेलू महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन, कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन, एवं घरेलू तथा कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन, शोधकार्य की पूर्णता हेतु संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा जिला गोरखपुर के 5 इन्टर कॉलेज से क्रमशः 200 –200 घरेलू तथा कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं का चयन किया गया। तथ्य संकलन हेतु सीमा रानी एवं बसंत बहादुर सिंह द्वारा रचित एजुकेशनल एडजस्टमेंट इन्वेन्ट्री का प्रयोग किया गया वर्तमान शोध कार्य के अध्ययन में दो प्रकार के चरों का प्रयोग किया गया :–स्वतन्त्र चर–घरेलू महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकायें' एवं कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकायें' तथा आश्रित चर में शैक्षिक समायोजन का अध्ययन किया गया, जिसके आधार पर समग्र रुप से यह परिणाम प्राप्त हुआ कि कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का स्तर घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं की तुलना में अधिक अच्छा है। निर्धारित पैमाने के अनुसार कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें प्राप्त मध्यमान के आधार पर क्रमशः मध्यम एवं निम्न स्तर का शैक्षिक समायोजन रखती है। परीक्षण के अनुसार क्रान्तिक मूल्य 6.96 टेबल वैल्यू 1.96 से अधिक है। अतः कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थकता स्तर 0.5 पर अन्तर है। दोनों समूहों के मध्य जो अन्तर पाया गया है वह वास्तविक है न कि संयोगवश।

मुख्य शब्द : कार्यरत महिलायें, घरेलू महिलायें, वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें, शैक्षिक समायोजन।

प्रस्तावना

वयःसन्धि अवस्था मानव जीवन में परिवर्तन की वह अवस्था है जिसमें मानव बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करता है। यौन विभिन्नता इस

अवस्था को प्रभावित करती है। बालिकाओं में यह अवस्था सामान्यतः 11 से 13 वर्ष तथा बालकों में यह 12–13 वर्ष के मध्य होती है, यद्यपि यह अवस्था अत्यन्त कम समय की होती है तथापि शारीरिक विकास एवं परिवर्तन के दृष्टिकोण से मानसिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस अवस्था में मानव न तो पूर्णतः बालक होता है और न ही पूर्ण किशोर, इसी कारण इसमें बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के संवेग एवं व्यवहार सम्मलित रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। परिवर्तन की यह अवस्था उसके जीवन में अनेक समस्याओं को जन्म देती है, ''वयःसन्धि अवस्था की यह समस्यायें शारीरिक बनावट और स्वास्थ्य से सम्बन्धित, परिवार में पारिवारिक सम्बन्ध, परिवार के बाहर के लोगों से सम्बन्ध, विपरीत लिंग के लोगों से सम्बन्धित, स्कूल कॉलेज के कार्य, भविष्य की समस्यायें जैसे शिक्षा व्यवसाय के चयन, सैक्स, नैतिक व्यवहार धर्म और अर्थ से सम्बन्धित समस्यायें हैं''। (हरलॉक,1978)

इस प्रकार वयः सन्धि अवस्था समस्याओं का घर है तथा उन्हें इन समस्याओं से निजात दिलाने के लिये माता पिता एवं शिक्षक का सहयोग एवं उचित समायोजन का होना अतिआवश्यक है। "समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकतायें तथा दूसरी ओर वातावरण के अधिकारों में पूर्ण सन्तुष्टि होती है अथवा यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा इन दो अवस्थाओं में सामंजस्य प्राप्त होता है।'' (एच0 जे0 आईजनेक और उनके साथियों, 1972) इसी प्रकार "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं पूर्ति करता है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।"

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है न कि स्थिर प्रक्रिया एक बालक इससे कितना प्रभावित है यह उसकी समस्या की संख्या से ज्ञात नहीं किया जा सकता बल्कि प्रभावशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि वह इन समस्याओं को और जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता है। इस अवस्था में समायोजन परिवार, समुदाय, समाज, शिक्षक, विद्यालय, शिक्षा, मित्र समूह आदि क्षेत्रों से प्रभावित होता है। बालकों में समायोजन का यदि निरीक्षण किया जाये यह परिवर्तन केवल बालक में ही नहीं होते है, बल्कि परिवर्तन वातावरण में भी पाये जाते है। वर्तमान समय में तीव्र शारीरिक परिवर्तन पाठ्यक्रम विभिन्नता, बढ़ती प्रतिस्पर्धता, व्यवसाय चयन की दुविधा, जैसी अनेक समस्यायें उत्पन्न होती रहती है। इन समस्याओं के समाधान के लिये परिवार, शिक्षकों का सहयोग अति आवश्यक है। "समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं।''(श्रीवास्तव डी0 एन0, 1992)

इस प्रकार स्पष्ट है कि परिवार विशेषतयाः माता–पिता के संरक्षण, निर्देशन तथा पालन पोषण का इस अवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और इसमें भी माता की भूमिका को सर्वोपरि माना गया है क्योंकि शिशु को जन्म देने से लेकर वयःसन्धि अवस्था तक की सम्पूर्ण गतिविधियों, आवश्यकताओं, व्यवहारात्मक विशेषताओं, रूचियों, सम्पूर्ण परिवर्तनों तथा इनके कारण उत्पन्न समस्याओं को एक माता अधिक व्यापक रूप से जानती है, यही कारण है कि परिवार में माता की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है। वर्तमान समय में बदलते सामाजिक प्रतिमानों ने महिलाओं के कार्यक्षेत्र को विस्तृत कर दिया है। भौतिकतावादी युग में जबकि नारी माता के रूप में अपनी भूमिका के निर्वहन के साथ ही अपने अस्तित्व की पहचान तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता की तलाश में घर की चाहरदीवारी से बाहर निकल कर अर्थोपार्जन हेतु अनेक कार्यों को सम्पादित कर रही है। भारत वर्ष में आज कामकाजी महिलाओं की संख्या लगभग एक करोड़ से भी अधिक हो गयी है। कृषि और निर्माण कार्य में तो पहले से ही महिलायें सक्रिय थीं लेकिन आज उनका कार्यक्षेत्र और भी व्यापक हो गया है इस प्रकार महिलाओं की कार्यस्थिति के दो स्वरूप समाज में उभर कर सामने आये है–

1. कार्यशील महिलायें
2. घरेलू महिलायें

वास्तव में दोनो ही महिलायें कार्य करती हैं बस इनके कार्य क्षेत्र में अंतर होता है। कार्यशील महिलायें जहाँ घर की सीमाओं से बाहर निकल कर घर की आर्थिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करती है, वहीं घरेलू महिलायें घर की सीमाओं में रह कर ही अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करती हैं। एक माता के रूप में महिलाओं का कार्यक्षेत्र और भी व्यापक हो जाता है। वर्तमान समय में महिलाओं में जीवनवृत्ति (कैरियर) के प्रति बढ़ती जागरूकता एवं आवश्यकताओं के कारण कार्यशील माताओं की संख्या बढ़ती जा रही है तथा इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठ रहा है कि कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं में से एक माता के रूप में सन्तान के साथ समायोजन स्थापित करने में कौन ज्यादा सफल है इसी तथ्य को ध्यान में रखकर कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन विषय का चयन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन।
2. घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन।
3. कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

साहित्यावलोकन

शोधकर्ता के शोध से सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए है उनमें प्रमुख निम्नलिखित है –

माधवन वी0 (2018) ने तिरूचनापल्ली के एक ग्रामीण स्कूल में किशोरावस्था के 50 विद्यार्थियों पर अध्ययन में ''आधे से अधिक विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता एवं समायोजन का स्तर उच्च पाया गया, माधवन के अनुसार – फिर भी हम इन्हें सुरक्षित पक्ष में नहीं रख सकते है। इनकी भावनाओं में अस्थिरता, तनाव, अवसाद,

भय, और चिन्ता, इनके अपने माता– पिता विशेषतः भाई–बहनों के साथ समायोजन में समस्यायें उत्पन्न करती है।

सक्सेना मीनाक्षी, (2013) द्वारा संवेगात्मक समस्याओं का किशोरावस्था में समायोजन पर प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन में यह तथ्य प्रकाश में आया कि किशोरावस्था में समायोजन पर आयु, जन्मक्रम, शिक्षा का स्तर, जाति समुदाय, लिंग, परिवार का स्वरूप, परिवार में सदस्यों की संख्या, पारिवारिक आय जैसे घटक महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। 15 वर्ष एवं अधिक आयु वर्ग, 1–2 जन्म क्रम, 11–12 कक्षाओं में अध्ययनरत, सामान्य एवं पिछड़ी जाति के 1–5 तथा 6–11 सदस्यों वाले एकल परिवार, किशोर तथा मध्यम एवं निम्न आय वर्ग वाले किशोर एवं किशोरियों की तुलना में 13–14 आयु वर्ग, तीसरे जन्म क्रम, 09–10 कक्षाओं में अध्ययनरत, अनुसूचित जाति के 11–15 सदस्यों वाले संयुक्त परिवार, किशोरी तथा उच्च आय वर्ग के किशोर एवं किशोरियों में शारीरिक, संवेगात्मक, एवं सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें अधिक पायी गयी।

मौला, जे0 एम0 एवं अन्य (2010) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह पाया कि "लोगों की अकादमिक कार्य के प्रति अभिप्रेरणा उनके घरेलू वातावरण की प्रकृति पर निर्भर करती है। उन्होंने इस तथ्य की भी प्रस्तावना की कि अविभावकों को इस बात की भी आवश्यकता है कि वे अपनी सन्तान की अकादमिक उपलब्धियों को महत्व दें, जिसके लिये वे सन्तान को घर में आवश्यक सुविधायें प्रदान कर सकते हैं।"

देशमुख, (2009) ने किशोरावस्था में चिन्ता एवं समायोजन से सम्बन्धी अपने अध्ययनों में यह पाया कि "किशोरावस्था में चिन्ता एवं समायोजन में सार्थक नकारात्मक सहसम्बन्ध है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में किशोर – किशोरियों में चिन्ता कम पायी गयी, जबकि शहरी क्षेत्रों में समायोजन क्षमता ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में अधिक अच्छी थी।"

गालाधर रिचर्ड (2008) ने न्यूयार्क में किशोरावस्था की तैयारी में संरक्षक तथा माता–पिता की भूमिका सम्बन्धी अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि "माता–पिता तथा संरक्षक वयःसंधि अवस्था में होने वाले परिवर्तनों के लिये एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते है।"

हीरेमथ कुप्पा, हंसल सरस्वती, एवं गाँवकर बी0, के अनुसार (2008)– पूर्व किशोरावस्था में व्यवहारात्मक समस्याओं से सम्बन्धित अध्ययन धारवार शहर के विभिन्न स्कूलों के 8वीं, 9वीं तथा 10 वीं कक्षा के 300 विद्यार्थियों पर किया गया। जिसके आधार पर यह तथ्य प्रकाश में आया कि "किशोरावस्था में जिनको स्कूल अथवा घर में सही सलाह तथा मार्गदर्शन मिल रहा था उनमें तुलनात्मक रूप से व्यवहारात्मक समस्यायें कम पायी गयी।"

नन्दवाना, शोभा एवं देवी, अंजू (2004) ने ''घरेलू और रोजगार प्राप्त महिलाओं की किशोरावस्था की लड़कियाँ विषयों का अध्ययन करने के लिये आकस्मिक प्रतिचयन विधि अपनायी और किशोरावस्था की 60 लड़कियों के जीवनवृत्ति परिपक्वता के आधार पर परिणाम निकाला, उसके औसत अनुमान में यह पाया गया कि कार्यशील महिलाओं की किशोरावस्था की लड़कियों ने तुलना में काफी अच्छे अंक प्राप्त किये।''

अनुसंधान प्रविधि

शोध कार्य की अध्ययन प्रक्रिया को इस प्रकार से योजनाबद्ध किया गया –

भौगोलिक क्षेत्र

इस शोध कार्य को सम्पादित करने हेतु गोरखपुर जिले के सरस्वती विद्या मंदिर, आर्यनगर उत्तरी गोरखपुर, नवल्स नेशनल एकेडमी गोरखपुर, श्री भगवती प्रसाद कन्या महाविद्यालय गोरखपुर, आमना मुसलिम गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल, बहरामपुर, गोरखपुर एवं कार्मल बालिका इन्टर कॉलेज, गोरखपुर का चयन किया गया।

प्रतिचयन विधि

आँकड़ों के संग्रह हेतु प्रतिदर्श का चयन संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया।

न्यादर्श एवं इकाइयों का चयन

न्यादर्श के चयन हेतु घरेलू तथा कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की 200–200 बालिकाओं का चयन किया गया।

तथ्य संकलन हेतु उपकरण

तथ्य संकलन हेतु सीमा रानी एवं बसंत बहादुर सिंह द्वारा रचित एजुकेशनल एडजस्टमेंट इन्वेन्ट्री का प्रयोग किया गया जिसमें वस्तु निष्ठ प्रकार के 30 प्रश्नों का संकलन है, प्रत्येक प्रश्न हेतु 3 विकल्प हाँ, नहीं एवं तटस्थ दिये गये है जिनके लिये क्रमशः 2, 1, एवं 0 अंक निर्धारित है। इस प्रकार प्रत्येक उत्तरदाता हेतु अधिकतम 60 प्राप्तांक निर्धारित है। अधिकतम प्राप्तांक निम्न शैक्षिक समायोजन को प्रदर्शित करते है एवं निम्न प्राप्तांक उच्च शैक्षिक समायोजन को प्रदर्शित करते है। प्राप्तांकों के आधार पर शैक्षिक समायोजन स्तर को 0–20 उच्च शैक्षिक समायोजन, 21–40 मध्यम शैक्षिक समायोजन एवं 41–60 निम्न शैक्षिक समायोजन के रुप में निर्धारित किया गया है।

चर

प्रस्तुत शोध कार्य के अध्ययन में दो प्रकार के चरों का प्रयोग किया गया –

स्वतन्त्र चर

वयःसंधि अवस्था की बालिकायें

1. कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें
2. घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें

आश्रित चर

शैक्षिक समायोजन।

सांख्यिकी विश्लेषण

इस शोध कार्य को करने हेतु प्राप्त आंकडों का अध्ययन करने के लिये निम्नलिखित सांख्यिकीय विश्लेषण किये गये –

1. समान्तर माध्य (Mean)
2. प्रमाणिक विचलन (Standard Deviation)

3. प्रमाणित विभ्रम (Standard Error)
4. काई स्कवायर परीक्षण (Chi-Square Test)
5. क्रान्तिक अनुपात (Critacal Ratio Value)

परिणाम एवं विश्लेषण

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन हेतु समंक संकलन के पश्चात उसे व्यवस्थित रुप में अंकित व सारणीबद्ध किया गया। शोध अध्ययन में शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करने के लिये चयनित बालिकाओं का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया तत्पश्चात अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि (एस0 ई0 डी0) का आंकलन तथा क्रान्तिक मूल्य (CR Value) का प्रयोग किया गया। कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन हेतु काई–स्कवायर टेस्ट ($\chi 2$) का प्रयोग किया गया । इस प्रकार शैक्षिक समायोजन का मूल्यांकन निम्नरूप से सामने आता है–

तालिका संख्या–1

कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन

उत्तरदाता	प्रतिदर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	39.74	5.46

उपरोक्त तालिका सं0 1 के अनुसार कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 39.74 एवं प्रमाणिक विचलन 5.46 पाया गया।

तालिका संख्या–2

घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन

उत्तरदाता	प्रतिदर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	42.90	3.39

उपरोक्त तालिका सं0 2 के अनुसार घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 42.90 एवं प्रमाणिक विचलन 3. 39 पाया गया।

तालिका संख्या–3

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

उत्तरदाता	प्रतिदर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि	क्रान्तिक मूल्य	सार्थकता स्तर
कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	39.74	5.46	0.454	6.96	0.5
घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	42.90	3.39			

उपरोक्त तालिका सं0 3 के अनुसार कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 39.74 एवं प्रमाणिक विचलन 5. 46 है, तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 42.90 एवं प्रमाणिक विचलन 3.39 पाया गया। अतः निर्धारित पैमाने के अनुसार कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें प्राप्त मध्यमान के आधार पर क्रमशः मध्यम एवं निम्न स्तर का समायोजन रखती है। परीक्षण के अनुसार क्रान्तिक मूल्य 6.96 टेबल वैल्यू 1.96 से अधिक है। अतः कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थकता स्तर 0.5 पर अन्तर है तथा दोनों समूहों के मध्य जो अन्तर पाया गया है वह वास्तविक है न कि संयोगवश।

तालिका संख्या–4

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

उत्तरदाता	उच्च शैक्षिक समायोजन	मध्यम शैक्षिक समायोजन	निम्न शैक्षिक समायोजन	योग
कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	06 (3.5)	89 (59)	105 (137.5)	200
घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	01 (3.5)	29 (59)	170 (137.5)	200
कुल योग	07	118	275	400

$\chi 2 = 49.6$, T. V. = 5.991 df = 2

उपरोक्त तालिका सं0 4 के अनुसार कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का स्तर क्रमशः 06, 89, 105 उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का स्तर क्रमशः 01, 29, 170, उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया। कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन स्तर का अध्ययन करके परीक्षण करने पर आंकलित मान (कुल कैल्कुलेटिव वैल्यू) 49.6 पाया गया। जिसका प्रमाणिक मान 0.5 स्तर पर 5.991 है। अतः आंकलित मान प्रमाणिक मान से अधिक है। इस प्रकार दोनों समूहों के मध्य जो अन्तर पाया गया है वह वास्तविक है न कि संयोगवश।

निष्कर्ष

परिवार सन्तान की प्रथम पाठशाला है तथा सन्तान के सर्वांगीण विकास में परिवार विशेषतयाः माता–पिता के संरक्षण, निर्देशन तथा पालन पोषण का इस अवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और इसमें भी माता की भूमिका को सर्वोपरि माना गया है। माता की कार्यस्थिति का वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन स्तर पर प्रभाव के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का स्तर घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं की तुलना में अधिक अच्छा है। इस सन्दर्भ में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि कार्यरत महिलायें महत्वाकांक्षी होती है, ये अपनी बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य के प्रति काफी सतर्क रहती है। कैरियर के अनुरूप कक्षा के विषयों का चुनाव, वांछित विषय मिलना, विद्यालय का चुनाव, अभिभावकों की आशायें, किशोरियों को मनोवैज्ञानिक रूप से तनाव देने वाले होते हैं जिनका समाधान कामकाजी महिलायें भली–भाँति करने में समर्थ होती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गालधर, रिचर्ड (2008) 'प्रिपयेरिंग फॉर प्यूवर्टी : गाइड लाइन्स फॉर पेरेन्ट्स एण्ड केयर टेकर्स।'*
2. *गुप्ता, राम बाबू (2000) 'बाल विकास' सप्तम् संस्करण प्रकाशक–रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा।*
3. *मौला जे0 एम0(मई 2010) ए स्टडी ऑफ दी रिलेशनशिप विटवीन एकेडमिक एचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड होम एन्वायरमेन्ट अमॉग स्टेन्र्डड एट प्यूपिल्स। एकेडमिक जनरल्स 5 पृ0सं0 213–217*
4. *माधवन वी0(2018) ''इमोशनल स्टेबिलिटी एण्ड एडजेस्टमेंट पर्सपेक्टिव ऑफ मेन्टल हेल्थ एमॉग रुरल स्कूल स्टुडेन्ट इन तिरुचनापल्ली डिस्ट्रिक'' आई0 एस0 आर0 ओ0 जनरल ऑफ ह्यूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंस। e ISSN :2279-0837*
5. *सक्सेना मीनाक्षी, (2013) इफेक्ट ऑफ इमोशनल प्रोबलम्स ऑन द एडजस्टमेंट अमॉग एडोलेसेन्ट : ए साइको सोसल स्टडी। (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ) सी0 सी0 एस0 यूनिवर्सटी, मेरट।*
6. *सारस्वत, मालती (2006) 'शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा' नवीनतम संस्करण, प्रकाशक – आलोक प्रकाशन, लखनऊ।*
7. *सिंह, वृन्दा (2010)''मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध' चतुर्थ संस्करण, प्रकाशक–पंचशील प्रकाशन, जयपुर।*
8. *हरलॉक, एलिजावेथ बी0, (2006) चाइल्ड डेवलपमेंट' पृ0 सं0 188 –196, छठा संस्करण प्रकाशक– टाटा मेक्ग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।*
9. *हीरेमथ, कुप्पा, हंसल सरस्वती, तथा गाँओकर वी0 (2008) 'बिहेवियरल प्रॉबलम एमॉग अर्ली एडोलेसेंट' यूनिवर्सटी ऑफ एग्रीकल्चर साइन्सेज, धारवाड, भारत।*
10. *श्रीवास्तव, डी0 एन0 एवं वर्मा, प्रीति (2005) 'बालमनोविज्ञान : बाल विकास', ग्यारहवां संस्करण प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।*
11. *श्रीवास्तव डी0 एन0 (2010–11) सांख्यिकी एवं मापन,तृतीय संस्करण, प्रकाशक अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2।*